प्रातःक्लास 13/5/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चे, है तो जिस्म के साथ। बाप भी अभी जिस्म के साथ के साथ है। इस घोड़े वा घोड़ी पर सवार है। और बच्चों को क्या सिखलाते हैं, जीते जी मरना कैसे होता है। और कोई सिखला न सके सिवाय बाप के। बाप का परिचय सभी को मिला है। वह ज्ञान सागर पतित–पावन है। ज्ञान से ही तुम पतित से पावन बनते हो। और पावन दुनियां भी बनानी है। इस दुनिया का ड्रामा प्लैन अनुसार विनाश होना नूँधा हुआ है। सिर्फ़ जो बाप को पहचानते हैं और ब्राह्मण भी बनते हैं। ब्राह्मण भी ज़रूर बनना ही है पवित्र बनने लिए। पवित्र अलग हो जाते हैं; इसलिए यह संगमयुग है ही अलग। पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम ते उत्तम पुरुष बनने का संगमयुग। कहेंगे उत्तम तो बहुत साधु, संत, महात्मा, वज़ीर, अमीर, प्रेज़ीडेन्ट आदि हैं ; परन्तु नहीं। यह तो कलियुगी पुरानी दुनियां भ्रष्टाचारी दुनियां है। पतित दुनियां में पावन एक भी नहीं। अभी तुम संगमयुगी बने हो। तुम्हारे जो गुरू थे वह भी पावन नहीं थे; क्योंकि वह भी जाते हैं गंगा स्नान करने। वह लोग पतित–पावनी पानी को समझते हैं। सिर्फ़ गंगा नहीं। जो नदियां हैं, जहां भी पानी देखते हैं समझते हैं पानी ही पावन करने वाला है। यह बुद्धि में बैठा हुआ है। कोई कहां कोई कहा जाते हैं। मतलब पानी में स्नान करने जाते हैं पावन बनने लिए। खुद साधु लोग भी जाते हैं और उन्हों के साथ लाखों आदमी जाते हैं। तुम उन्हों को भी समझा सकते हो; परन्तु इस समय वह नहीं समझेंगे। उन्हों के फॉलोवर्स बहुत ढेर हैं। जब उन्हों के अच्छे–2 फॉलोवर्स इस तरफ आ जाये और राइट बात सुने, समझे कि बरोबर हमारी भूल है। पानी से तो कोई पावन हो न सके। अगर पानी में स्नान करने से पावन हो जाते फिर तो इस समय सारी सृष्टि ही पावन होती। इतने सभी पावन दुनियां में होनी चाहिए। यह तो पुरानी रसम चली आती है। सागर में जाकर सारा कचड़ा पड़ता है। फिर वह पावन कैसे बनावेंगे। पावन तो (बन)ना है आत्मा को। इसके लिए तो परमपिता चाहिए जो आत्माओं को पावन बनावे। ..... (पा)वन होते ही हैं सतयुग में पतित (होते हैं) कलियुग में। अभी तुम संगमयुग पर हो। तुम पतित से पावन होने लिए पुरुषार्थ करते हो। तुम जानते हो हम शूद्र वर्ण के थे। अभी ब्राह्मण वर्ण के बने हैं। शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बनाते हैं। हम हैं सच्चे–2 मुखवंशावली ब्राह्मण। वह है कुख वंशावली ब्राह्मण। प्रजापिता तो प्रजा तो सारी हो गई। प्रजा का पिता है ब्रह्मा। वह तो बहुत ग्रेट–2 ग्रैंडफादर हो गया। ज़रूर वह था फिर कहां गया ? पुनर्जन्म तो लेते हैं ना। विष्णु भी पुनर्जन्म लेते हैं। यह राज़ तो समझाया है ब्रह्मा और सरस्वती माँ और बाप। वही फिर महाराजा–महारानी बनते हैं। जिसको ही विष्णु कहा जाता है। वही फिर 84 जन्मों के बाद आकर माँ और बाप बनते हैं। कहते भी हैं जगतअम्बा। सारी जगत की माँ हो गई। लौकिक माँ तो हरेक के अपने–2 घर बैठी है; परन्तु जगदम्बा को कोई भी नहीं जानते। ऐसे ही अंधश्रद्धा से कह देते हैं। जानते कोई को नहीं। जिसकी पूजा करते हैं उनके ऑक्युपेशन को नहीं जानते। जो भी ऋषि–मुनि आदि होकर गये हैं उनसे पूछा जाता था तुम रचयिता और रचना के बाद (आदि, मध्य, अंत को जानते हो ? तो नेती–2 कह देते थे। अभी तुम बच्चे जानते हो रचयिता है ऊँच ते ऊँच। यह उल्टा झाड़ है। इनका बीज ऊपर है। बाप को ऊपर से नीचे आना पड़े तुमको पावन बनाने। तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है। हमको पावन बनाकर, सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देकर फिर उस नई सृष्टि का चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। इस चक्र के राज़ को दुनियां में तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जानते। कोई भी रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को नहीं जानते। रचयिता ही अपना और रचना के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाते हैं। कहते हैं फिर 5000 वर्ष आकर तुमको यह बनाऊँगा। यह भी है ड्रामा में बना बनाया। ड्रामा के क्रियेटर, डायरैक्टर, मुख्य एक्टर्स और ड्रामा के आदि, मध्य, अंत को एक्टर्स अगर न जाने तो उनको बेअक़्ल मूर्ख कहेंगे ना। बाप कहते (हैं) 5000 वर्ष पहले भी हमने तुमको समझाया था। तुमको अपना परिचय दिया था। जैसे कि अभी दे रहा हूँ। तुमको पवित्र भी बनाया था। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। वही सर्वशक्तिवान पतित–पावन है।

गायन भी है अंतकाल जो फलाना सिमरे.....वल–वल अर्थात् घड़ी–2। अभी इस समय तुम जन्म तो लेते (हो); परन्तु शुकर–कुकर, कुत्ते–बिल्ले नहीं बनते। वैश्याएं बनते हैं। वैश्याओं के भी बच्चे तो होते हैं ना। ऐसे नहीं कि नहीं होते हैं। यहां एक काम करता था वह वैश्या का बच्चा था। इसके लिए इनको कहा ही जाता है वैश्यालय। अभी तुम बच्चे चलने वाले हो शिवालय में। शिवालय नई दुनियां को कहा जाता है। वैश्यालय से शिवालय बनने में एक सेकण्ड लगता है। फिर शिवालय से वैश्यालय बनने में 84 जन्म लग जाते हैं। मैक्सीमम बहुत ते बहुत जन्म 84 है। फिर कम होते–2 एक जन्म तक हो जाते हैं। बच्चे समझते हैं शिवालय में बहुत ही थोड़े होते हैं। वैश्यालय में तो कितने ढेर मनुष्य हैं। अभी बेहद का बाप आया हुआ है। कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ। यह सभी काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हैं। उन्हों को फिर ज्ञान–चिक्षा पर चढ़ाना है। तुम अभी ज्ञान चिक्षा पर चढे हो। ज्ञान चिक्षा पर चढ़ कर फिर विकार में जा नहीं सकते। प्रतिज्ञा करते हैं हम पवित्र रहेंगे। बाबा कोई वह रखड़ी नहीं बांधते हैं। यह तो भक्ति मार्ग का रिवाज़ चला आता है। वास्तव में यह है इस समय की बात। तुम समझते हो पवित्र बनने बिगर नई दुनियां के मालिक कैसे बनेंगे ? फिर भी पक्का कराने लिए प्रतिज्ञा लिखाई जाती है बच्चों से। कोई बल्ड से लिख कर देते हैं। कोई कैसे लिखते हैं। बाबा आप आये है हम आप से वर्सा ज़रूर लेंगे। निराकार साकार में आये हैं ना। जैसे बाप अवतरते हैं वैसे तुम आत्माएं भी अवतरते हो। ऊपर से नीचे आते हो पार्ट बजाने। यह भी तुम समझते हो यह सुख और दुःख का खेल है। तुम्हारे बुद्धि में है आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुःख। बाप समझाते हैं पौना से भी जास्ती सुख भोगते हो। आधा कल्प के बाद भी तुम बहुत धनवान थे। कितने बड़े–2 मन्दिर आदि बनाते थे। दुःख तो पीछे होता है। जब बिल्कुल तमोप्रधान भक्ति बन जाती है। बाप ने समझाया है तुम पहले–2 अव्यभिचारी भक्ति थी। सिर्फ़ एक की भक्ति करते थे। जो बाप तुमको देवता बनाते हैं, सुखधाम (में ले) जाते हैं तुम उनकी ही पूजा करते थे। फिर बाद में व्यभिचारी भक्ति शुरू होती है। पहले तो एक ही पूजा.....की.....थे। अभी तो 5 भूतों के बनाये हुये शरीरों की पूजा करते रहते हैं। चैतन्य क(ी) भी तो जड़ की भी पूजा करते हो। 5 तत्व के बनाये हुये शरीर को देवताएं से भी ऊँच समझते और पूजे हैं। देवताओं को सिर्फ़ ब्राह्मण ही हाथ लगा सकते हैं। तुम्हारे तो ढेर के ढेर गुरू लोग हैं। यह बाप बैठ कर बतलाते हैं। इसने भी गुरू किये हैं। कहते हैं हम ने भी सभी कुछ किया। भिन्न–2 हठयोग आदि कान , नाक मूँदना, घंट बजाना यह सभी कुछ किया। आखिरीन सभी कुछ छोड़ देना पड़ा। (व)ह धंधा करें या यह धंधा बैठ करें। पिनकी आती रहती थी। तंग हो जाता। पुरानी नियम आदि सीखने में बड़ी तकलीफ होती है। आधा कल्प भक्ति मार्ग में थे। अभी मालूम पड़ता है। बाबा बिल्कुल एक्युरेट बताते हैं। ..... कहते हैं भक्ति परम्परा से चली आती है। अभी सतयुग में भक्ति कहां से आई। हो नहीं सकता। वहां यह (बा)तें कहां से आई। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। मूँढ़मति हैं ना। मूँढ़ बुद्धि को बन्दर बुद्धि जनावर बुद्धि कहा (ज)ाता है। एक को कहते भी हैं तुम तो भकनी हाथी हो, उल्लू हो। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे। बाप आकर (रच)यिता और रचना का भी परिचय देते हैं। कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ। शरीर भी उनका लेता हूँ जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। यही नम्बरवन में था फिर 84 जन्म ले पतित बना है। नम्बरवन जो (सु)न्दर था वही फिर काला बन गया है। आत्माएं भिन्न–2 शरीर धारण करती हैं। तो बाप कहते हैं मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ मैं उनमें बैठा हूँ। क्या सिखलाने? जीते जी करना(मरना)। इस दुनियां से तो मरना ही है। अभी तुमको पवित्र होकर मरना है। मेरा पार्ट ही है पावन बनाने का। तुम भारतवासी बुलाते ही हो पतित–(पाव)न....और कोई ऐसे नहीं कहते हैं लिबरेटर। दुःख की दुनियां से छुड़ाने लिए आओ। सभी मुक्तिधाम चले (जावें)गे। जिसके लिए ही सन्य(ा)सी आदि माथा कूटते हैं। तुम पुरुषार्थ करते हो सुखधाम के लिए। वह है प्रवृत्ति (मा)र्ग वालों के लिए। निवृत्ति मार्ग वाले जा न सके। जानते हो हम प्रवृत्ति मार्ग वाले थे। अभी फिर अपवित्र ....। प्रवृत्ति मार्ग वालों का काम निवृत्ति मार्ग वाले कर न सके। यज्ञ ,तप ,दान आदि सभी प्रवृत्ति मार्ग वाले

करते थे। वह लोग घर–बार छोड़ कर जंगल में जाने थे। उनको तो तीर्थ आदि करने का नहीं है। वह जानते ही हैं ब्रह्म ईश्वर है। ब्रह्म महातत्व को याद करते हैं। उनको ब्रह्म–ज्ञानी, तत्वज्ञानी कहा जाता है। ज्ञान भी देंगे ब्रह्म में लीन होने का। याद भी ब्रह्म को करेंगे। जब सतोप्रधान थे तो उनमें ताकत थी। पीछे गिरते आये हैं। अभी तो यहां आकर गुरू बन कर बैठे हैं। तुम्हारी कितनी इनसल्ट की है। स्त्री को जीते जी विधवा बना देते। बच्चों को आरफन बना देते हैं। यह भी जानते हो रावण सारी दुनियां को निर्धण का बना दिया है। क्यों? बाप धणी को भूल गये हैं। तुम अभी फील करते हो। अभी हम सभी को जानते हैं। शिवबाबा हमको घर बैठ पढ़ा रहे हैं। बेहद का बाप सुख देने वाला है बेहद का। उनसे तुम बहुत समय बाद मिलते हो तो प्रेम के आँसू आते हैं। बाबा कहने से ही रोमांच खड़ी हो जाती है। ओ हो बाबा आया है हम बच्चों की सर्विस में। बाबा हमको इस पढ़ाई से गुल–2 बनाते हैं। इस गन्दी छी–2 दुनियां से हमको ले जावेंगे अपने साथ। भक्ति मार्ग में तुम्हारी आत्मा कहती थी बाबा आप आवेंगे तो हम वारी जावेंगे आप का ही बनेंगे। दूसरा कोई नहीं। नम्बरवार तो है ही। सभी का अपना–2 पार्ट है। कोई तो बाप को बहुत प्यार करते हैं। आज भी बच्ची ने देखा बाबा चला जाता है तो रोने लग पड़ी। आगे विदाई देने लिए यहां हॉल में आते थे। एक/दो को देख सभी को रोना आ जाता था। वह भी रसम निकाल दी। अभी तो कहते हैं फाल इन लाइन। मिलिट्री के माफिक। सतुयग में रोने करने का नाम ही नहीं होता। यहां तुम कितना रोते हो। जब स्वर्ग़ में गया तो रोना क्यों चाहिए? और ही बाजा बजाना चाहिए। वहां तो बाजे बजते हैं। तमोप्रधान शरीर खुशी से छोड़ देते हैं। यह रसम भी शुरू यहां से होती है। यहां तुम कहेंगे हमको अपने घर जाना है। वहां तो समझते हैं पुनर्जन्म लेना है। तो बाप सभी बातें समझा देते हैं। भ्रमरी (का) मिसाल भी तुम्हारा है। तुम ब्राह्मणियां हो। विष्टा के कीड़ों को.....भूं–2 करते हो। वह सन्यासी आदि क्या जाने इन बातों को ? वह तो जो सुनाते हैं ..... नहीं। बाप कहते हैं यदा यदा हि.....इनका भी अर्थ नहीं समझते हैं; इसलिए बाप कहते हैं मैं आया हूँ । मनुष्यों को ज्ञान तो है नहीं। उनको तो जो सुनाओ सत्य–2 करते रहेंगे। ऐसी–2 बातें शास्त्रों सुन–2 कर मनुष्य कितना खुश होते हैं। तुमको बाप कहते हैं यह तो सुनना न है। यह है भक्ति का भूसा। यह छोड़ देना है। इस शरीर को भी छोड़ देना है। जीते जी मरना है। बाप (क)हते हैं अपन को आत्मा समझो। अभी हमको वापस जाना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देह को (भू)ल जाओ। बाप तो बहुत ही मीठा है। कहते हैं मैं तो तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने आया हूँ। अभी सुखधाम और शान्तिधाम को याद करो। अलफ़ और बे। यह है सुखधाम। शान्तिधाम हम आत्माओं का घर है। हम(ने) पार्ट बजाया अभी घर जाना है। वहां यह छी–2 नहीं ले जावेंगे। अभी तो यह बिल्कुल ही जड़–जड़ीभूत शरीर हो गया है। अभी हमको बाप सम्मुख सिखलाते हैं इशारे में। मैं भी आत्मा हूँ। तुम भी आत्मा हो। मैं इस (श)रीर से अलग होकर तुमको भी वह सिखलाता हूँ। तुम भी अपन को शरीर से अलग समझो। अभी घर जाना .....यहां तो रहने का नहीं। यह भी जानते हो विनाश होना है। भारत में रक्त की नदियां बहेंगी। यहां ही (स)भी धर्म वाले इकट्ठे हैं। सभी आपस में लड़ मरेंगे। यह पिछाड़ी का मौत है। पाकिस्तान में क्या–2 होता था। ..... उनको खून करने लगे वह उनको करने लगे। बड़ी–कड़ी सीन थी। कोई देखे तो बेहोश हो जाये। अभी बाबा (तु)मको मज़बूत बनाते हैं। शरीर का भान ही निकाल देते हैं। बाबा ने देखा बच्चे याद में नही रहते हैं। बहुत (क)मज़ोर है; इसलिए सर्विस भी नहीं बढ़ती है। घड़ी–2 लिखते हैं बाबा भूल जाते हैं। बुद्धि लगती नहीं। बाबा कहते (यो)ग अक्षर छोड़ दो। विश्व की बादशाही देने वाले बाप को भूल जाते हो। थप्पड़ मारो अपन को। आगे भक्ति में (बु)द्धि और तरफ चली जाती थी तो अपन को चुनरी पहनते थे। ऐसे भी बहुत करते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे (तुम) आत्मा अविनाशी हो। सिर्फ़ पावन और पतित बनते हो। बाकी आत्मा कोई छोटी बड़ी नहीं होती। परमआत्मा बाप को कहा जाता है। सन्यासियों को तुम पवित्र समझते थे तब तो माथा टेकते हो। बाप समझाते हैं

तुम जो भी गुरू करते हो वास्तव में किसको भी करना नहीं चाहिए। यह तो तुमको विधवा बना देते हैं। अभी बाप आकर तुमको इनकी जंजीरों से छुड़ाते हैं। तुम्हारे हम जिन्स को आरफन बना देते है। घर–बा(र) छोड़ चले जाते हैं। बाप गया तो घर निर्धण का हुआ। कोई सम्भालने वाला नहीं। कहते हैं ना तुम लड़ते क्या हो। कोई धणी–धोणी नहीं है ? अभी सारी दुनियां में लड़ाई झगड़ हैं। निर्धण के बन पड़े हैं। बाप आकर धणी का बनाते हैं। सारी राजाई तुमको मिल जाती है। सच्ची कमाई होती है फिर झूठी कमाई को क्या करेंगे; इसलिए उसको एक्सचेंज करना बहादुरी है। करके दिखाना है। बाप कहते हैं हमने करके दिखाया ना। बस हम यह सौदा करते हैं। बच्चों को निमित्त बनाकर सभी कुछ दे दिया। यह भी तुम सम्भालो। पालना करो। जिनकी भट्ठी बनी (उ)नके हवाले कर दिया। शास्त्रों मे तो झूठी बातें डाल दिया है। कृष्ण को इतना प्यार भी करते, वैकुण्ठ का प्रिंस वहां फिर कंस , जरासंधी कहां से आवेंगे। मनुष्य कितने बेसमझ बन गये हैं। यह तो बड़ा बाबा है। बच्चों को बैठ कर समझाते हैं कल क्या थे आज क्या बन गय हो। बच्चों को लज्जा आती है बाबा तो सच्च कहते हैं। अभी बाप आया है उनको याद करना है। दैवी गुण धारण क(रना) है। प्रजा भी बनानी है; इसलिए बाप पूछते रहते हैं जो मास, दो तीन सर्विस करने लिए तैयार हैं वह नाम देवें। बच्चों ..... ज़रूरत है बच्चों की। वह जिस्मानी सोशल वर्कस् तो बहुत हैं। अभी तो रूहानी सेवा करनी है। जो सर्विस लिए तैयार हो बाबा को लिखे तो बड़े सेन्टर खोल देंगे। जितना–2 आप समान बनावेंगे तुम्हारी प्रजा बनती जावेगी। कोई तो प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा हम आपसे पूरा वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। ब्लड से लिख कर देते हैं। बाप कहते हैं यह युद्ध का मैदान है। तुम याद करेंगे माया बुद्धि योग अपने तरफ लगा देगी। बाप तो कहते हैं शरीर निर्वाह लिये धंधा आदि भी भल करो काम काज करते धंधा आदि करते बुद्धि का योग वहां लगाओ। (आशुक–माशुक की मिसाल) एक/दो को देख खुश होते रहेंगे। तुम तो आशुक हो बहुत पुराने। भक्ति मार्ग में भी पूजा करते (थे), याद करते थे..... तो कहते हैं मैं सम्मुख आया हूँ। ड्रामा के प्लैन अनुसार कल्प पहले मिसल तुम बच्चों पास आया हूँ साधारण तन में; इसलिए गोरा और सांवरा कहते हैं। अभी भी निशानियां हैं ना। राम को भी काला क्यों बनाते हैं ? ना. को भी कहां गोरा, कहां काला (दि)खाते हैं। उनका अर्थ भी बाप ने समझा दिया है। और किसकी बुद्धि में नहीं आवेगा। काम चिक्षा पर बैठ (का)ले हो गये हैं। जगतनाथ के मन्दिर में बहुत अच्छी समझानी है। ऊपर में दिखाया है देवताएं वाममार्ग में गये। तो चित्र भी काले बनाये हैं। तुम इन बातों को अभी समझ गये हो। वह तो समझते हैं कृष्ण सदैव है ही। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। अभी तुमको सारी दुनियां भूल अपना घर और राजधानी याद पड़ती है। अल्फ और बे बादशाही। यह चक्र कैसे फिरता है कल्प की आयु कितनी है तुम जानते हो। देवी–देवताएं भी नहीं जानते। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। झाड़ की इतनी बड़ी आयु थोड़े ही होती है। बड़ के झाड़ की सबसे बड़ी आयु होती है। बच्चों को तो खुशी होनी चाहिए बेहद का बाबा हमको पढ़ाते हैं। धोबी को बुलाया है हमारी आत्मा को शुद्ध करो। जिससे फिर शरीर भी शुद्ध मिलेगा। सारे विश्व को कितना शुद्ध बना देते हैं। यह रूहानी धोबी भी है। बैरिस्टर भी है। सोनार भी है। सभी है। गायन है तुम मात–पिता बन्धु आदि हो। 21 जन्म लिए कितना सुख देते हैं। बाकी तो सभी दुःख ही देते हैं। नम्बरवन है काम कटारी। पैसे आदि लूट कर मार देते हैं। पैसे के लिए तो कितनी मारा–(मारी) होती है। बाप तो तुमको 21 जन्मों लिए झोली भर देते हैं। वहां मारा–मारी नहीं। जो तुमसे कोई छीन न सके। बुद्धि में आता है ना। इतनी खुशी भी होनी चाहिए। हम श्रीमत पर स्वर्ग क(ी) राजधानी स्थापन कर रहे हैं। अपन से पूछते रहो हम क्या बनेंगे? अपनी अवस्था से अपना पद समझ सकते हो। फिर समझ कर पुरुषार्थ करना है। बच्चों को समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

डायरैक्शनः– मधुबन में जब कोई भी पार्टी आवे तो आते ही स्टेशन पर, जाने की रिज़र्वेशन करा लेवें। नहीं तो भीड़ के कारण बहुत तकलीफ होती है।